पशुधन द्वारा
जीवन में गुणात्मक सुधार

बिहार सरकार

पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग

सर्दी के मौसम में पशुओं की देखभाल हेतु आवश्यक सुझाव

- सर्दी के मौसम में पशुओं को ठंढ़, ओस एवं कोहरे से बचाने के उपाय करने चाहिए। इसके लिए पशुओं को गर्म स्थान पर जैसे छत के नीचे या घास–फूस की छप्पर के नीचे रखना चाहिए। रात में पशुओं को कभी भी खुले में नहीं बांधना चाहिए। फर्श गीले व ठंडे नहीं रहनी चाहिए। ठंढ़ से बचाव हेतु फर्श पर पुआल बिछा कर रखना चाहिए।
- धूप निकलने की स्थिति में पशुओं को खुले धूप में बांधें क्योंकि सूर्य की किरणों में जीवाणु एवं विषाणु को नष्ट करने की बहुत क्षमता होती है तथा विटामिन डी की प्राप्ति होती है।
- अधिक ठंढ़ होने पर पशु के शरीर को गर्म रखने के लिए शरीर पर कपड़ा या जूट की बोरी बांध दें। पशुगृह को गर्म रखने के लिये अलाव/धुआं इत्यादि का प्रयोग अत्यंत सावधानी से करना चाहिए ताकि आगजनी की समस्या न हो।
- पशुओं को नियमित व्यायाम करायें। रोगी, कमजोर, गाभिन और अपाहिज पशुओं को टहलाकर तथा स्वस्थ एवं वयस्क पशुओं को हल्का या तेज दौड़ाकर व्यायाम कराना चाहिए। इससे पशुओं के सभी अंगों में रक्त संचार सुधरती है।
- उन्हें स्वच्छ एवं ताजा पानी, जो अत्यधिक ठंढ़ा न हो, पीने को दें।
- ब्याने वाले पशुओं का विशेष ध्यान रखें। उनका शरीर गर्म रखा जाए तथा उचित मात्रा में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, मिनरल्स, विटामिन से भरपूर संतुलित भोजन दिया जाय।
- खुरहा–मुंहपका रोग, गलाघोंटू, लंगडी, पी.पी.आर., बकरी/भेंड़ चेचक आदि रोगों से बचाव हेतु टीके, यदि अभी तक नहीं लगवाएं हों तो, कृपया समय रहते अवश्य लगवा लें।
- अन्तः एवं बाह्य परजीवी से बचाव हेतु उचित कृमिनाशक दवाओं का उपयोग करना चाहिए।
- इस मौसम में कफ, निमोनिया (बछड़ों में) और खांसी से संबंधित रोग होने की स्थिति में पशु चिकित्सक से यथाशीघ्र परामर्श लेकर उचित औषधि पशुओं को देना चाहिए।
- दुधारू पशुओं को थनैला रोग से बचाने के लिए दूध पूरा व मुट्ठी बांध कर निकालें और दूध दूहने के बाद थनों को कीटाणुनाशक (फिटकिरी, लाल पोटाश) घोल से धो लेना चाहिए।
- पशुओं को नमक एवं खनिज लवण मिश्रण निर्धारित मात्रा में दाने या चारे में मिलाकर दें।
- सर्दियों के मौसम में दलहनी किस्म का हरा चारा जैसे बरसीम, ल्यूसर्न, जई आदि रसदार चारा प्रचुर मात्रा में उपलब्ध रहता है। इसलिए इन्हें पशुओं को पर्याप्त मात्रा में देना चाहिए। शुष्क पदार्थ का एक तिहाई भाग हरा चारा होना चाहिए। महंगे दाने मिश्रण की मात्रा को दलहनी किस्म के हरे चारे के प्रयोग से कम किया जा सकता है। हरे चारे की मात्रा एक निश्चित अनुपात में ही बढ़ाना चाहिए। अत्यधिक मात्रा में हरा चारा देने से पशुओं में दस्त, अफरा इत्यादि की समस्या हो सकती है।
- पशुओं को खिलाने के पश्चात् अतिरिक्त हरा चारा अगर बचा हुआ हो तो उसे छाया में सुखाकर सूखी घास 'हे' के रूप में संरक्षित कर लें। इसे हरे चारे की अनुपलब्धता में इस्तेमाल किया जा सकता है।
- पशुओं को संतुलित आहार देना चाहिए। दानों में अनाज, खल तथा भूसी की समान मात्रा मिलाएं। खल में मूंगफली की खल का प्रयोग करना चाहिए। दानें में 10 प्रतिशत शीरा का प्रयोग करना चाहिए।
- सर्दी में अक्सर अधिकतर भैंसे गर्म हो जाती हैं, इसे उचित समय पर गर्भाधान करवाएं।

पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग, पशुपालन सूचना एवं प्रसार कार्यालय, बिहार, पटना द्वारा जनहित में प्रचारित